ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(5): 18-21
www.allresearchjournal.com
Received: 10-02-2023
Accepted: 15-03-2023

राहुल पाण्डेय
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

Corresponding Author:
राहुल पाण्डेय
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

सरोज स्मृति: करुणा और व्यंग्य की तस्वीर

राहुल पाण्डेय

सारांश
सरोज स्मृति निराला जी की आत्मचरितात्मक कविता है जिसमे निराला जी ने अपनी पुत्री सरोज के बचपन के चित्र, धर्मिक विधानों से परे पुत्री का विवाह और अपनी पुत्री के असामयिक निधन का हृदयहारी वर्णन किया है। कविता में आहत पितृ हृदय का अंकन है। साथ ही समाज के प्रति गहरा आक्रोश और व्यंग्य भी चित्रित किया है। कविता में निराला जी के व्यक्तित्व की जटिलताओं का भी वर्णन है। इस आलेख में इसी दृष्टि से विचार किया गया है।

कूटशब्द: आत्मचरितात्मक कविता, शोक गीत, करुणा, व्यंग्य, वात्सल्य, आत्मप्रताड़ना, सामाजिक विद्रूपताओं, वस्तुपरक तटस्थता।

प्रस्तावना
सरोज स्मृति, राम की शक्ति पूजा और तुलसीदास की गिनती महाप्राण निराला की महत्त्वपूर्ण रचनाओं में की जाती है। सरोज स्मृति अपनी प्रकृति और स्वरूप में राम की शक्ति पूजा और तुलसीदास से इतर है।डॉ दूधनाथ सिंह अपनी पुस्तक 'निराला: आत्महंता आस्था' में लिखते हैं कि "उनकी दूसरी कथात्मक कविताओं से बिल्कुल अलग 'सरोज-स्मृति' में कोई ऐतिहासिक, अर्ध-ऐतिहासिक या लोक आख्यान पर आधारित इतिवृत्त नहीं उठाया गया है। यह वस्तु के स्तर पर सर्वथा एक आत्म-चरितात्मक कविता है।'' सरोज स्मृति एक शोक गीत है। अपनी पुत्री सरोज के असामयिक निधन पर निराला ने शोक संतप्त हृदय की विह्वल भावनाओं को इस रचना में वाणी दी है। सरोज की मृत्यु ने पितृ हृदय को किस प्रकार आहत किया,सरोज स्मृति उस स्थिति का पूर्ण अंकन करती है।अपनी हार्दिकता,ममतापूर्ण वात्सल्य और आत्म प्रताड़ना से संयुक्त इस कविता में कवि के व्यक्तित्व का आलेखन भी है। भाव और शिल्प का चमत्कार पूर्ण संगठन इस कविता को श्रेष्ठ शोकगीतों में स्थान दिलाता है।इस कविता में उन्होंने अपने शोक के साथ-साथ समाज के प्रति आक्रोश और व्यंग्य प्रकट किया है। इसकी तुलना रामविलास शर्मा ने विलियम शेक्सपीयर के किंग लियर से करते हुए लिखा है कि हिंदी में ही नहीं अंग्रेजी में भी ऐसे शोकगीत दुर्लभ है। यह कविता हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ शोकगीतों में से एक मानी जाती है।डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव ने 'सरोज-स्मृति' के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है - ' 'अस्तु, निराला का शोक-गीत हिन्दी में अपने ढंग की पहली और वरण रचना है। विषय वस्तु नितांत वैयक्तिक है और इसी कारण उसकी करुणा हमें मर्माहत करती है।

इसकी शैली वर्णन-प्रधान है और भावातिरेक की प्रगति-क्षण इसमें संयमित रूप से गुंफित हो गए हैं। इसमें कवि नितांत व्यक्तिगत रहते हुए भी अपनी वस्तु परक तटस्थता का निर्वाह कर सका है और यही कारण है कि रचना केवल शोकोद्गार न होकर एक अच्छी कलाकार, परिनिष्ठित सृजना के रूप में समादृत है। ''

सरोज स्मृति में करुणा और व्यंग्य जैसे परस्पर विरोधी शिल्प को निराला जी ने एक जगह उपस्थित कर दिया है।वैसे महाप्राण निराला के काव्य में व्यंग्य सामान्यतः विद्यमान रहता है किंतु सरोज स्मृति में एक तरफ करुणा और दुःख है वहीं दूसरी तरफ चुटीला व्यंग्य प्रस्तुत है।

सरोज निराला जी की इकलौती पुत्री थी।जिसका निधन सवा अठारह वर्ष की अवस्था में हो गया।जहाँ दुख एक कठोर वास्तविकता के रूप में व्यक्त होता है और इस दुःख के बखान में कवि का कंठ किसी अंतः संगीत से नहीं बाह्य विषमताओं के बोध से फटा -फटा सा हो गया है।यहाँ दुःख का साक्षात्कार उसके निपट नंगेपन में है, उसे भुलावा देने या मधुर-मधुर बनाने की चेष्टा नहीं।ऐसे विषयों पर पश्चिम में अनेक शोक गीत लिखे गए हैं।ग्रे का शोक गीत अंग्रेजी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है लेकिन इसमें सरोज स्मृति जैसी भावनाएं नहीं मिलती।मैथ्यू अर्नाल्ड ने अपने दोस्त आर्थर क्लॉक की मृत्यु पर शोक गीत लिखा किंतु इसमें भावों की उच्चता का अभाव है।इस कविता में निराला जी ने अपने शोक के साथ-साथ समाज के प्रति आक्रोश और व्यंग्य प्रकट किया है। इसकी तुलना रामविलास शर्मा ने विलियम शेक्सपीयर के किंग लियर से करते हुए लिखा है कि हिंदी में ही नहीं अंग्रेजी में भी ऐसे शोकगीत दुर्लभ है। यह कविता हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ शोकगीतों में से एक मानी जाती है।

सरोज स्मृति में निराला के व्यक्तित्व की जितनी जटिलताओं का उदघाटन हुआ है उतनी सम्पूर्णता से अन्य किसी कृति में नहीं जो सका है।अतः सरोज स्मृति की संवेदना सब पर भारी पड़ी है। निराला के जीवन के सभी खण्ड-दृश्य सरोज के जीवन की मार्मिकताओं से अत्यंत घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है। यही सम्बद्धता सम्पूर्ण प्रसंग को अत्यंत गम्भीर व करुण बना देती है।

कविता की शुरुआत में सरोज की मृत्यु को एक दार्शनिक भूमिका प्रदान की गई है फिर भी इस कविता में निराला के हृदय में छिपे उद्गार करुण धारा के रूप में प्रकट हो रहे हैं-

ऊनविंश पर जो प्रथम चरण
तेरा वह जीवन-सिन्धु-तरण;
तनये, ली कर दृक्पात तरुण
जनक से जन्म की विदा अरुण!
गीते मेरी, तज रूप-नाम
वर लिया अमर शाश्वत विराम
पूरे कर शुचितर सपर्याय
जीवन के अष्टादशाध्याय,
चढ़ मृत्यु-तरणि पर तूर्ण-चरण
कह - "पितः, पूर्ण आलोक-वरण
करती हूँ मैं, यह नहीं मरण,
'सरोज' का ज्योतिःशरण - तरण।"

एक आत्मीय दुःख के सहज बखान का आरंभ यह नहीं है। अनुभूति को एक भव्य रूपक में बांध कर महाकाव्य की ऊंचाई पर ले जाने की कोशिश है।एक उत्तापरहित,शांत,संयत,ओज जो दुःख को अनुभूति नहीं उससे एक सीढ़ी ऊपर सौंदर्य भी नहीं, एकदम से जीवन दर्शन की स्थिर सत्यता तक ले जाता है।यहाँ निराला दुःख की अनुभूति से मुठभेड़ नहीं उसका अतिक्रमण करते हैं।लेकिन ऐसा वे दुःख को सत्य बनाने के लिए करते हैं।निराला सरोज स्मृति में आदर्श और यथार्थ के अनुभव स्तरों को साथ-साथ एक घुमड़ते हुए तनाव की स्थिति में जीते हैं।

निराला अपनी जटिलताओं के विश्लेषण से करुणा की सृष्टि करते हैं।कवि अतीत की अनेकानेक स्मृतियों में अपनी हार और लाचारी का लेखा प्रस्तुत करता है-

"धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका!
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित-काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर।"

पुत्री के प्रति पिता का दायित्व पूर्ण रूप से निर्वाह न कर पाने की कसक भी कवि को सालती है। दूधनाथ सिंह अपनी पुस्तक 'निरालाः आत्महंता आस्था' में लिखते हैं कि उनकी दूसरी कथात्मक कविताओं से बिल्कुल अलग 'सरोज-स्मृति' में कोई ऐतिहासिक, अर्ध-ऐतिहासिक या लोक आख्यान पर आधारित इतिवृत्त नहीं उठाया गया है। यह वस्तु के स्तर पर सर्वथा एक आत्म-चरितात्मक कविता है।''

इसके बाद सरोज की बाल्य-क्रीड़ा का चित्र है।इसकी पृष्ठभूमि में निराला की व्यर्थता की भावना उभरती है-

"पर संपादकगण निरानंद
वापस कर देते पढ़ सत्त्वर
दे एक-पंक्ति-दो में उत्तर।

लेकर रचना उदास
ताकता हुआ मैं दिशाकाश।
बैठा प्रान्तर में दीर्घ प्रहर
व्यतीत करता था गुन-गुन कर
सम्पादक के गुण; यथाभ्यास
पास की नोंचता हुआ घास
अज्ञात फेंकता इधर-उधर
भाव की चढी़ पूजा उन पर।"

'ताकता हुआ मैं दिशाकाश' में 'ताकता' निराला की निरीहता और 'दिशाकाश' उसकी कर्तव्यविमूढता को उजागर करता है।'पास की नोचता हुआ घास' उनकी व्यर्थताबोध को द्योतित कर रहा है।
निराला की जन्म कुण्डली में दो विवाह लिखे थे। पुत्री को देख कर पिता के मन में अपने भाग्य अंक खण्डित करने की चाह जागी। प्रियजनों और आत्मीयजनों के द्वारा दूसरा विवाह करने के प्रस्ताव को स्वयं को मांगलिक कह कर टालते रहे। स्वयं की कुण्डली को अपनी पुत्री को खेलने के लिए देते हैं, बालिका सरोज कुण्डली को फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर देती है। निराला के सामने अपने भाग्य अंक को खण्डित करने का इससे बेहतर कोई उपाय नहीं था: ''पढ़ लिखे हुए शुभ दो विवाह

हंसता था, मन में बढ़ी चाह
खण्डित करने को भाग्य-अंक
देख भविष्य के प्रति अशंक।''

पुत्री सरोज के विवाह के प्रसंग में अपने चारों ओर घिरते -कसते परिवेश के विरुद्ध निराला का आक्रोश अपने सजातीय कुलंगारों पर बरसा है।निराला का कान्यकुब्ज समाज उस समय दहेज जैसी कई तरह की बुराईयों, रूढ़ियों और सड़ी-गली मान्यताओं से ग्रस्त था। निराला की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी और न ही निराला जैसे प्रगतिशील व्यक्तित्व के लिए यह सम्भव था कि वे इन रूढ़ियों का समर्थन करते हुए ऐसे लोगों से अपनी कन्या का विवाह कर सके। निराला ने ऐसे समाज पर बड़ा तीखा व्यंग्य प्रहार किया है-

"ये कान्यकुब्ज-कुल कुलांगार,
खाकर पत्तल में करें छेद,
इनके कर कन्या, अर्थ खेद,
इस विषय-बेलि में विष ही फल,
यह दग्ध मरुस्थल -- नहीं सुजल।"

निराला ने अपने पूरे साहस और दृढ़ता के साथ सामाजिक बुराईयों का बहिष्कार किया और परम्परागत विवाह के नियमों को तोड़कर एक नवीन तरीके से अपनी पुत्री का विवाह किया। निराला ने माता-पिता दोनों की भूमिका सरोज के जीवन में अदा की थी –

" हो गया ब्याह आत्मीय स्वजन
कोई थे नहीं, न आमन्त्रण
था भेजा गया, विवाह-राग
भर रहा न घर निशि-दिवस जाग।"
- "माँ की कुल शिक्षा मैंने दी,
पुष्प-सेज तेरी स्वयं रची,
सोचा मन में, "वह शकुन्तला,
पर पाठ अन्य यह अन्य कला।"

इसके उपरांत "सरोज स्मृति" का अंतिम दृश्य उपस्थित होता है-

"दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!
हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत के-से शतदल!
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण।"

डॉ. बच्चन सिंह ने लिखा है कि '' वह गत कर्मों को ईश्वरार्पित करके कन्या का त्रयस्थ करता है। कविता में ईश्वरवादी स्तर पर उसे मुक्ति मिल जाती है,पर कविता का समग्र प्रभाव इस अर्पण से कम नहीं होता,बल्कि ट्रेजेडी और धनीभूत भी होता है।"
यह निराला जी की अपने ढंग की एक अकेली कविता है जिसमें उनका अपना जीवन भी आ गया है। निराला जी मृत्युंजयी थे। डॉ राम विलास शर्मा के शब्दों में- "जीवन द्रष्टा अनेक हुए हैं जीवन से निराश होकर मृत्यु का आमंत्रण करने वालों की भी कमी नहीं। जो मृत्यु का सामना करके मृत्यु का वरण करते हैं, उन विरले साधकों में थे निराला।"
निष्कर्षतः कह सकते हैं कि 'सरोज-स्मृति' का अन्त एक रचना का अन्त नहीं था, सरोज कवि के लिए एक रचना नहीं थी,वह इससे कुछ बढ़ कर थी।वह शायद कवि के लिए वह जीवन थी जिसमें रचना सम्भव होती है।कवि इस रचना में अपनी शोकानुभूति के साथ-साथ समाज की विद्रूपताओं को यथार्थ रूप में सामने लाते

हैं।जो कविता को एक सम्पूर्ण तथा श्रेष्ठतम शोकगीत की ओर ले जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. डॉ दूधनाथ सिंह, निराला: आत्महंता आस्था, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009, पृ. 166
2. शर्मा, रामविलास (2009). निराला की साहित्य साधना (Vol. 1 To 3). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ° 233.।
3. निराला काव्य, डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, पृष्ठ 191
4. सं. रामविलास शर्मा/राग विराग /सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (संस्करण 2002)पृष्ठ संख्या 79
5. 80
6. 83
7. 84
8. 86
9. 90
10. 91
11. निराला काव्य, डॉ. बच्चन सिंह, पृष्ठ 90